फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–

< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 270 1/- दिसम्बर 2010

चालाकी–समझदारी और सीधापन

●अपने अथवा समूह-विशेष (परिवार, विद्यालय, संस्थान, क्षेत्र, जाति, रंग, लिंग, धर्म, प्रान्त, देश, देशों का समूह-विशेष) के हानि-लाभ को ध्यान में रख कर बुद्धि-ज्ञान का प्रयोग करना चालाकी-समझदारी हैं। अनेक प्रकार के लाभ हैं। अनेक प्रकार की हानि हैं। जो सही आंकलन कर सके वह समझदार। जो कम सही हिसाब लगा सके वह चालाक। जोड़-तोड़ में, झूठ बोलने में, सच बोलने में जो माहिर हों वह चालाक-समझदार हैं .... सच कई प्रकार की हैं। क्या है सच? क्या है झूठ? सच और झूठ, दोनों गड़बड़ा गये हैं।

●चालाकी यह नहीं देखती कि सम्बन्धों का क्या हो रहा है। समझदारी सम्बन्धों को टूटने नहीं देती क्योंकि कहीं न कहीं, कभी न कभी काम में आ सकते हैं। समझदारी से काम चलाऊ सम्बन्ध बनते हैं। समझदारी से लोगों के बीच मधुर सम्बन्ध नहीं बन सकते। चालाकी और समझदारी विगत में महाभारत लिये थी – बन्धुओं द्वारा परस्पर हत्यायें।

●आज चालाकी और समझदारी बहुत-ही व्यापक हैं। हर क्षेत्र में आज चालाकी और समझदारी का बोलबाला है। हर व्यक्ति, प्रत्येक संस्थान आज हर समय, हर स्थान पर विक्रेता अथवा ग्राहक बनी-बना है या फिर ऐसा होने के लिये प्रयासरत हैं। प्रकृति के संग हानि-लाभ वाले, चालाकी-समझदारी वाले सम्बन्ध पर्यावरण के बारे में हाय-तौबा के बावजूद पृथ्वी पर जीवन को विनाश के कगार पर ले आये हैं। अन्य जीव योनियों .... अपनों के संग चालाकी-समझदारी वाला व्यवहार अकेलेपन की महामारी लाया है। और, अपने स्वयं के साथ चालाकी-समझदारी, यानी व्यवहारिकता व्यक्तित्व में एक ही नहीं, कई विभाजन लाई है। चालाकी-समझदारी का बोलबाला सामाजिक मनोरोग का बोलबाला है।

●चालाकी-समझदारी अधिक चालाकी-समझदारी को जन्म देती है, टेढापन टेढेपन को बढाता है। महाभारत के दौर से बहुत अधिक विकट स्थिति में हम आज अपने को पाते हैं। गीता ज्ञान की तुलना में आज ज्ञान बहुत अधिक घातक है। और, उपरोक्त के दृष्टिगत यह कहना कि इस युग में सीधापन नहीं चलेगा.........अति निराशा, अति हताशा की अभिव्यक्ति हैं – असहायता के दर्शनों की पुष्टि करना है।

●*ऊँच-नीच वाली विद्यमान व्यवस्था में ही समस्याओं के समाधान ढूँढने के प्रयास चालाकी-समझदारी के आधार हैं। सामाजिक समस्याओं के निजी समाधानों, समूह-विशेष के हित में समाधानों के प्रयास हैं चालाकी-समझदारी। वर्तमान व्यवस्था में ही समस्याओं के समाधान ढूँढना काफी समय तक बहुत व्यापक होता है। अत्याधिक विकट स्थिति आज फिर वर्तमान व्यवस्था के पार जाने के लिये दस्तक पर दस्तक दे रही है।*

●छिपाने से वास्तविकता बदलती नहीं है। चालाकी, समझदारी, झूठ, छल-कपट वास्तविकता को सामने नहीं आने देते। सन्देह और अविश्वास का इनके साथ चोली-दामन का साथ है। पीड़ा, बढती पीड़ा, असहय पीड़ा..... वास्तविक स्थिति को सामने रखेंगे तो ही एक-दूसरे की पीड़ा को जानेंगे, समझेंगे। और, वास्तविकता को बदलने के लिये मजदूरों का, लोगों का आपस में जुड़ना प्राथमिक आवश्यकता है......

●हानि-लाभ के चक्रव्यूह की काट क्या है? चालाकी-समझदारी के फेर से कैसे निकलें? चौतरफा सन्देह और अविश्वास से पार कैसे पायें? व्यवहारिकता की चौखट से बाहर कैसे निकलें? यह हालात बनी कैसे? प्रश्न बहुत हैं। जड़ें बहुत पीछे जाती हैं। इन सब की चर्चा फिर कभी करेंगे। आज हर कोई जो आसानी से कर सकती-सकता है उस पर विचार-विमर्श के लिये आमन्त्रण के संग कुछ बिन्दुओं को देखें।

●आज सीधापन व्यवहारिक नहीं है। इस टेढी दुनियाँ में सीधापन बेवकूफी है। हाँ, टेढेपन से टेढापन बढता है। पर हाँ.... और हाँ, शायद सीधापन ही टेढेपन का उपचार है। मन्थन करते हुये आइये

– सीधेपन की राह पर चलने की कोशिश करें। अपने जैसों के संग प्रारम्भ करें। अपने सहकर्मियों और पड़ोसियों के साथ व्यवहार में शुरू करें।

– सन्देह और अविश्वास के बोलबाले में दरार डालने के लिये धीरज, बहुत धीरज आवश्यक है। अटपटे हँसी-मजाक के लिये तैयार रहना भी जरूरी लगता है।

– वर्तमान परिस्थितियों में सीधापन छोटे-मोटे नुकसान तो लिये ही लिये है। इन छोटी-छोटी परेशानियों को झेलना बहुत कठिन नहीं है।

– पड़ोसियों और सहकर्मियों के बीच अपने को इक्कीस दिखाने के प्रयास नहीं करना। पड़ोसियों और सहकर्मियों को उन्नीस दिखाने की कसरतें नहीं करना। अपनी बातें ऊपर रखना. ..... झूठे-थोथे सम्मान से अधिक कुछ नहीं दिला सकती।

– पड़ोस में और कार्यस्थल पर अपना बोझा दूसरों पर डालने की कोशिशें नहीं करना। पड़ोसियों-सहकर्मियों के ऐसा करने पर बिदकना नहीं। बिना अधिक परेशानी वाला ऐसा जो अतिरिक्त कार्य हो वह कर देना।

– पड़ोसियों और सहकर्मियों के नकारात्मक पहलूओं को तूल नहीं देना। उनके सकारात्मक पहलूओं को हाथोंहाथ लेना, स्वागत करना।

– चुगली की महामारी से बचना।

– पड़ोसियों और सहकर्मियों को काटने से, चपत लगाने से बचना। चाय-पानी के छोटे-छोटे खर्चे झेल सकते हैं, स्वयं झेलना।

– अपने को अच्छा और सहकर्मी-पड़ोसी को बुरा दिखाने से दूर रहना। अपने जैसों की परेशानी बढाने वाले कदमों से कोसों दूर रहने की कोशिश करना।

बहुत-ही आसान। छोटे-छोटे कदम। धीरज। समय बीतने के साथ सीधापन सन्देहों को कम करेगा। अविश्वास की घटायें छँटने लगेंगी। चालाकी और समझदारी ढीले पड़ेंगे। टेढापन डगमगाने लगेगा.....

एक-दूसरे के नजदीक आते, जुड़ते-जोड़ते मजदूर सहज-ही वर्तमान वास्तविकता को बदलने की राहों पर बढ सकते हैं, मधुर सम्बन्धों की राहें खोल सकते हैं।●

अनुरोध

आप रिटायर होने पर **मजदूर समाचार तालमेल** के दायरे में मिलने-जुलने के स्थान के तौर पर अपने निवास के आसपास **बैठक** की स्थापना में रुचि रखते हैं तो कृपया हम से सम्पर्क करें। किसी की भी बैठक स्थापना में दिलचस्पी है तो कृपया मिलें।

महीने में एक बार छापते हैं, 9000 प्रतियाँ निःशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

फरीदाबाद में मजदूर

पहली जुलाई 2010 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4348 रुपये (8 घण्टे के 167 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4998 रुपये (8 घण्टे के 192 रुपये)। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है।* इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ

सैनल्यूब इन्डस्ट्रीज मजदूर : "35 डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट स्थित फैक्ट्री में कम्पनी द्वारा घोषित 12 प्रतिशत बोनस के विरोध में दिवाली से एक दिन पहले शाम को 17 स्थाई मजदूर धरने पर बैठ गये। मैनेजमेन्ट ने पुलिस बुलाने की धमकी दी। धरने पर बैठे रात के 11 बज गये तब कम्पनी ने 14 प्रतिशत बोनस दिया। ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को बोनस में मात्र 500 रुपये दिये। सुबह 9 से रात 7½ की शिफ्ट, ओवर टाइम सिंगल रेट से। ठेकेदार के जरिये रखे 135 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 3800-4000 रुपये।"

लखानी फुटवीयर श्रमिक : "प्लॉट 130 सैक्ट-24 स्थित फैक्ट्री में एक लाइन पर **एडिडास,** एक अन्य पर **ऑल स्टार** और दो लाइनों पर **लखानी** के जूते बनते हैं। एडिडास लाइन पर गुणवत्ता पर जोर है — एक शिफ्ट में 500 जोड़ी जूते बनते हैं, बायर प्रतिनिधि आते हैं उस रोज 250 जोड़ी ही। ऑल स्टार लाइन पर गुणवत्ता पर कुछ कम जोर है — 800 जोड़ी जूते बनते हैं, बायर प्रतिनिधि आते हैं तब 400 जोड़ी। एडिडास और ऑल स्टार लाइनों पर बैठने के लिये स्टूल हैं। लखानी लाइनों पर उत्पादन से ही मतलब है — एक शिफ्ट में एक लाइन पर 2400 जोड़ी जूते बनते हैं ; खड़े-खड़े काम करना पड़ता है, पानी-पेशाब की भी दिक्कत, पैर सूज जाते हैं, चक्कर आते हैं। बायर प्रतिनिधि आते हैं तब उनकी लाइन पर मजदूरों को मास्क-दस्ताने-एपरन-कान के प्लग देते हैं तथा कैसे काम करना है सामने टाँग देते हैं..... और उनके जाते ही यह सब वापस ले लेते हैं। लाइनें पास-पास हैं पर बायर प्रतिनिधि लखानी लाइनों की तरफ देखते ही नहीं। बहुत जरूरी हो तो भी छुट्टी नहीं देते। कैन्टीन में भोजन बीमार करता है...... महँगाई भत्ते के 134 रुपये आते ही कैन्टीन में चाय 2 की जगह 3 रुपये की कर दी। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं पर 1400 कैजुअल वरकरों को ई.एस.आई. कार्ड देते ही नहीं — फण्ड मिल जाता है।"

इण्डिया फोरजिंग कामगार : "प्लॉट 28 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में एक हजार से ज्यादा मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **मारुति सुजुकी** के एक्सल, हब आदि और ट्रैक्टर के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। स्टाफ के 50 लोग ही स्थाई हैं। वर्षों से काम कर रहे 50 मजदूर कैजुअल हैं — निकालते नहीं, पर स्थाई भी नहीं करते। ई.एस. आई. व पी.एफ. इन 100 के ही हैं। तीस ठेकेदारों के जरिये रखे 1000 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 3000-3500, ऑपरेटरों की 4500-5000 रुपये, पाँच सौ लोग पीस रेट पर। इन 1000 की ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में चारों तरफ लोहे का बुरादा, कचरा फैला रहता है। दस्ताने नहीं, जूते नहीं। चोट लगती रहती हैं, फैक्ट्री में पट्टी भी नहीं रखते, अपने पैसों से इलाज करवाओ। साबुन नहीं, हाथ पौंछने के लिये कपड़ा भी नहीं। कैन्टीन थी, अब नहीं है। दिहाड़ी वालों को लगातार 36 घण्टे रोकते हैं तब मुश्किल से रोटी मँगाते हैं। ओवर टाइम के घण्टे अथवा पीस सँख्या नहीं लिखो तो गड़बड़ी कर महीने में 500-600 रुपये खा जाते हैं। तनखा देरी से, अक्टूबर की 20 नवम्बर को दी। फैक्ट्री में प्रदूषण बहुत ज्यादा है।"

एस पी एम ऑटो वरकर : "सैक्टर-59 में जे सी बी के पास स्थित फैक्ट्री में 200 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **टाटा मोटर, मारुति सुजुकी** के तथा निर्यात के लिये एक्सल व गियर बनाते हैं। जबरन 36 घण्टे रोक लेते हैं — गेट बन्द कर देते हैं और हैल्परों को तो निकलने ही नहीं देते, 20 रुपये रोटी के लिये देते हैं। हैल्परों को 12 घण्टे प्रतिदिन पर 30 दिन के 5200 रुपये। ऑपरेटरों की तनखा 4000-4500 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। मात्र स्टाफ कम्पनी ने स्वयं रखा है, सब मजदूर एक ठेकेदार के जरिये रखे हैं और 200 मजदूरों की ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। भारी काम है, चोट लगती रहती हैं, मजदूर अपने पैसों से उपचार करवायें। पानी खारा। शौचालय वर्षों से जाम — बाहर जाना पड़ता है और पाँच मिनट में अन्दर मिलना चाहिये। बहुत गाली देते हैं — हैल्परों को सुपरवाइजर थप्पड़ भी मार देते हैं। तनखा देरी से, अक्टूबर की 22 नवम्बर को दी।"

प्रणव विकास मजदूर : "45-46 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों पर ओवर टाइम के लिये दबाव डालते हैं, धमकाते हैं। महीने में 100 से 240 घण्टे ओवर टाइम.... भुगतान सिंगल रेट से।"

स्टील अथोरिटी श्रमिक : "सैक्टर-5 में सेल स्टील यार्ड में 50 से अधिक मजदूरों की सुबह 8 से रात 8 की शिफ्ट है। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 4200 रुपये देते हैं। महीने में 8-10 बार रात 8 से अगली सुबह 8 बजे तक रोकते हैं तब लगातार 36 घण्टे ड्युटी हो जाती है। रात को रोकते हैं तब रोटी के लिये 35 रुपये देते हैं पर उस 12 घण्टे की ड्युटी के लिये मात्र 35 रुपये ही देते हैं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

हेम इम्ब्राइड्री कामगार : "116ए डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। मशीन व हाथ से कढाई वाले हैल्परों को 12 घण्टे पर 26 दिन के 4000-4200 तथा ऑपरेटरों को 5000-5500 रुपये। कम्प्युट्रीकृत मशीनों से कढाई वाले हैल्परों को 12 घण्टे पर 26 दिन के 5000 और ऑपरेटरों को 6000 रुपये। रविवार के कार्य को ओवर टाइम कहते हैं और उसका भुगतान सिंगल रेट से।"

इलाइट प्रेसिंग वरकर : "प्लॉट 302 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में सुबह 8½ से रात 11 बजे तक काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कैजुअल वरकरों की तनखा 3000 रुपये, ई. एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

नोर्थ इण्डिया स्विचगीयर इन्डस्ट्रीज श्रमिक: "16/2 मथुरा रोड़ पर कारखाना बाग स्थित फैक्ट्री में तनखा 2500-2600 रुपये। रोज 2 घण्टे और रविवार को 8 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।"

एक्मे ऑटो मजदूर : "प्लॉट बी-8 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 2500 रुपये देते थे, मजदूर टिकते ही नहीं थे, सितम्बर से 3500 रुपये किये हैं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। यहाँ **हीरो होण्डा** के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं हैं। तनखा देरी से, अक्टूबर की 15 नवम्बर को दी।"

स्टील फोर्ज श्रमिक : "प्लॉट 5 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में वाहनों के गियर बनाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ऑपरेटरों की तनखा 4000 रुपये। रजिस्टर में हस्ताक्षर करवा लिये दिवाली से एक महीने पहले पर कम्पनी ने बोनस नहीं दिया।"

ओसवाल डाइकास्टर वरकर : "48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे लगभग 1500 मजदूरों को वार्षिक बोनस नहीं देते। यहाँ डाईकास्टिंग विभाग में तीन शिफ्ट और फैटलिंग विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **टी वी एस, हीरो होण्डा, जी ई (मैराथॉन) मोटर** के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। बीमार होने पर भी छुट्टी नहीं देते — गोली खा कर काम करो।"

ओरियन्ट पँखा मजदूर : "प्लॉट 11 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे 250 वरकरों की तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते, पी. एफ. नम्बर नहीं बताते और छोड़ने पर फण्ड के पैसे मजदूर को नहीं मिलते।"

वर्कशॉप वरकर

ए डी इन्डस्ट्रीज मजदूर : "यादव डेरी के पास, मोहना रोड़, बल्लभगढ स्थित वर्कशॉप में 9 महिला और 9 पुरुष **इन्डीकेशन इन्स्ट्रूमेन्ट्स** के लिये वाहनों के मीटर बनाते हैं। महिला मजदूरों की तनखा 2200-3700 रुपये और पुरुष मजदूरों की 3700-5000 रुपये। महिला मजदूरों का रोज 2 घण्टे ओवर टाइम, पुरुषों का ज्यादा घण्टे, भुगतान सिंगल रेट से। पीने का पानी खारा।"

कृष्णा इंजिनियरिंग श्रमिक : "लाम्बा चौक, मुजेसर स्थित वर्कशॉप में 4 मजदूर डाइयाँ बनाते हैं। तनखा 4000-5000 रुपये।"

गुड़गाँव में मजदूर

लोगवैल फोर्ज मजदूर : "116 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री से मई में एक ठेकेदार भाग गया तो कम्पनी ने उसके जरिये रखे 150 वरकरों को दूसरे ठेकेदार के खाते में डाल दिया। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटे थे – तीन वर्ष के फण्ड के पैसों के लिये कहा तो साहब बोले कि भाग गये ठेकेदार से लो...."

कलमकारी एक्सपोर्ट्स श्रमिक : "383 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में मजदूर की मजबूरी नहीं समझते और 5 मिनट देरी से पहुँचने पर वापस लौटा देते हैं। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर वर्ष-भर बाद भी ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। कार्मिक विभाग 'अभी समय नहीं है' कह कर टालता रहता है। बहुत जरूरी काम होने पर 30 मिनट के लिये गेट पास माँगने पर बड़ी मुश्किल से 15 मिनट का देते हैं. .... और चन्द मिनट की देरी पर 4 घण्टे के पैसे काट लेते हैं। तबीयत खराब होने पर विभाग प्रमुख से आवेदन पर हस्ताक्षर करवा कर कार्मिक विभाग में जाते हैं तो वहाँ आवेदन फाड़ देते हैं यह कहते हुये कि महीने में डेढ दिन की छुट्टी की ही अनुमति है। भर्ती के समय 15 स्थानों पर हस्ताक्षर करवाते हैं पर मजदूर को कोई कागज नहीं देते। कहने को सुबह 9 से साँय 5½ की ड्युटी है पर रात 9 बजे तक तो काम करना ही पड़ता है, रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। पीने के पानी की समस्या है। शौचालय गन्दे रहते हैं।"

ओरचिड ओवरसीज कामगार : "डी-60 व 61 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों में महिलाओं की तनखा 3300 और पुरुषों की 3500 रुपये। सिलाई कारीगर पीस रेट पर। सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है और पुरुष मजदूरों को रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। हैल्परों को ओवर टाइम का भुगतान मात्र 10 रुपये प्रतिघण्टा की दर से। रात 9 बजे बाद रोकते हैं तब रोटी के लिये 15 रुपये ही देते हैं। यहाँ **नैक्सट** का माल बनता है। एक हजार मजदूर हैं, ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं हैं – स्टाफ की ही हैं। साहब लोग गाली देते हैं।"

मोडलामा वरकर : "105-106 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 27 नवम्बर को सुबह 9 बजे काम आरम्भ करने वाले कुछ मजदूर आज 28 नवबर को अब साँय 4 बजे भी काम कर रहे हैं, रात 8 बजे छूटेंगे.....अरजेन्ट शिपमेन्ट, मजदूरों को रात 1½ बजे मास्टर बोले थे कि करोड़ों का घाटा हो जायेगा। तीन महीनों से एक मैडम के आने से गुण्डागर्दी कुछ कम हुई है फिर भी बहुत है..... 27 नवम्बर को 7 नई महिला मजदूरों को बुरी तरह डाँटा और नौकरी से निकाल दिया। एक इनचार्ज ने 27 नवम्बर को ही एक मास्टर को दो बार धक्का मारा और पीस लोडर का गला पकड़ कर थप्पड़ मारे। बड़े साहब से ले कर महिला सुरक्षाकर्मी तक बदतमीजी करते हैं..... लेडी गार्ड शौचालय से खींच कर महिला मजदूर को कार्मिक विभाग में ले गई। यहाँ **गैप** और **ओल्ड नेवी** का माल बनता है। दो घण्टे ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से और उसके बाद के समय के सिंगल रेट से। यहाँ काम करती लगभग 500 महिला मजदूरों को रविवार को भी सुबह 9 से दोपहर बाद 3½ तक काम के लिये बुलाते हैं। कैन्टीन में भोजन बहुत-ही खराब होता है इसलिये दिन में कम ही लोग खाते हैं पर नाइट लगती है तब रात 8½ बजे बहुत-ही लम्बी लाइन लग जाती है, रात 9½ तक लगी रहती है। भोजन के लिये कम्पनी 20 रुपये का कूपन देती है। दिहाड़ी वालों के संग पीस रेट वाले सिलाई कारीगर भी हैं। पीस रेट वाले ज्यादा रफ्तार से काम करते हैं और कम्पनी दिहाड़ी वालों से उनके बराबर उत्पादन माँगती है। पीस रेट भी चेन सिस्टम में है, पार्ट रेट है जिससे कारीगर तत्काल आपस में जुड़ नहीं पाते और साहब लोग इस-उस को थोड़ा ज़्यादा रेट दे कर फूट डालते रहते हैं। जो बनाये हैं उनकी सँख्या कम कर देते हैं और जो रेट स्वीकार करते हैं वह भी नहीं देते।"

भूरजी सुपरटेक मजदूर : "272 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को अक्टूबर की तनखा 16 नवम्बर को दी। तनखा से पी.एफ. की राशि काटते हैं पर छोड़ने पर फण्ड के पैसे निकालने का फार्म मुश्किल से भरते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और उन में से भी 200-400 रुपये गड़बड़ कर हर महीने खा जाते हैं। रात 2 बजे तक रोकते हैं तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते – अगली सुबह 6½ तक रोकने पर 20 रुपये देते हैं। धमकियाँ, गालियाँ देते हैं।"

ज्योति एपरेल्स श्रमिक : "158 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सिलाई विभाग में महीने में 120-150 घण्टे ओवर टाइम और फिनिशिंग विभाग में 200 घण्टे के आसपास। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। रात 9 बजे बाद रोकते हैं तब रोटी के लिये 25 रुपये देते हैं – रात 10 बजे छोड़ दिया तो 10 रुपये ही। ई.एस.आई. व पी.एफ. 350 मजदूरों में 25 की ही हैं। आजकल सिलाई कारीगर कम पड़ रहे हैं इसलिये साहब लोग ज्यादा चिकचिक नहीं करते।"

आई एम टी मानेसर

मुंजाल शोवा मजदूर : "प्लॉट 26 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में तीन शिफ्टों में 15 स्थाई मजदूर, 400 ट्रेनी, 400 कैजुअल वरकर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 1000 मजदूर **हीरो होण्डा, यामाहा, होण्डा** दुपहियों के शॉकर बनाते हैं। ट्रेनी को वर्ष बाद ब्रेक कर री-ट्रेनी रख लेते हैं, स्थाई नहीं करते और 5 वर्ष बाद कहते हैं कि कहीं और काम देख लो। कैजुअलों को 6 महीने में ब्रेक कर फिर रख लेते हैं। ओवर टाइम में ट्रेनी को 35-36 रुपये, कैजुअल वरकर को 18-20 रुपये, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को 40 रुपये प्रतिघण्टा। ओवर टाइम के लिये जबरन रोकते हैं, गेट बन्द करवा देते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखों को डर रहता है कि ओवर टाइम से इनकार पर सजा में कैजुअल वरकर बना देंगे। ट्रेनी और ठेकेदारों के जरिये रखों का महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम, कैजुअल 60-70 घण्टे ही करते हैं। खड़े-खड़े काम, पानी-पेशाब की भी फुरसत नहीं – रिलीवर हैं ही नहीं। लगातार 16 घण्टे लाइन पर ..... 27 नवम्बर को रिअर शॉकर लाइन पर एक मजदूर को चक्कर आ गया। फिर भी, ट्रेनी और ठेकेदारों के जरिये रखे ओवर टाइम के चक्कर में ही यहाँ काम करते हैं। कैन्टीन में दो रुपये में थाली, सुबह 11 से दोपहर 1½ तक आधे-आधे घण्टे के 5 भोजन अवकाश। ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं पर ई.एस.आई. कार्ड सिर्फ 15 स्थाई मजदूरों को दिये हैं। और, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते। वार्षिक बोनस 15 स्थाई मजदूरों को ही देते हैं, अन्य 1800 मजदूरों को नहीं देते।"

एडिगियर इन्टरनेशनल श्रमिक : "आई एम टी सैक्टर-4 के प्लॉट 150 तथा 189 और सैक्टर-6 में प्लॉट 253 में **एडिडास, रीबोक, प्यूमा** आदि का काम होता है। प्लॉट 150 में 300 स्थाई और ठेकेदार के जरिये रखे 650 मजदूर सुबह 9½ से रात 1 बजे, अगली सुबह 5 तक जैकेट, ट्रैक सूट, लोअर, हाफ पैन्ट, टी शर्ट तैयार करते हैं। महीने में 150-180 घण्टे ओवर टाइम. ..... पे-स्लिप में 50 घण्टे दिखाते हैं और भुगतान दुगुनी दर से जबकि पूरे 150-180 घण्टे का भुगतान सिंगल रेट से करते हैं। इधर 22-27 नवम्बर के दौरान तीन रोज सुबह 9½ से अगली सुबह 5 तक काम। प्लॉट 189 में यही सब है। प्लॉट 253 में चमड़े और रैक्सीन का काम 500 मजदूर करते हैं, अगस्त के बाद से ठेकेदार नहीं है। यहाँ 150-160 घण्टे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं जबकि पे-स्लिप में दिखाते 40-50 घण्टे और दुगुनी दर हैं। चमड़ा विभाग में रसायनों की बहुत ज्यादा बदबू, चक्कर आ जाते हैं। रात 1 बजे तक रोकने पर रोटी के लिये 25 रुपये और अगली सुबह 5 बजे तक के लिये 50 रुपये देते थे पर वर्ष-भर पहले 50 को घटा कर 40 कर दिया। शौचालय के पास लगी शिकायत पेटी से जनरल मैनेजर पर्चियाँ लेता ही है और 50 रुपये की माँग वाली बहुत पर्चियाँ होती हैं पर अभी तक 40 ही देते हैं। ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को काम करते तीन महीने हो जाते हैं तब ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू करते हैं। बायर प्रतिनिधि हर महीने आते हैं, तीनों जगह बहुत सफाई।"

कुमार प्रिन्टर्स कामगार : "प्लॉट 24 व 38 सैक्टर-5 आई एम टी स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। दिन वालों को सुबह 8 से रात 8 की शिफ्ट के बाद रात 1 बजे तक रोकते हैं। रात 7 से अगली सुबह 7 वालों को सुबह 9 बजे तक रोकते हैं। **(बाकी पेज चार पर)**

दिल्ली में मजदूर

अगस्त से देय मँहगाई भत्ता (डी ए) की घोषणा दिल्ली सरकार द्वारा दिसम्बर आरम्भ तक नहीं। अकुशल श्रमिक 5278 रुपये (8 घण्टे के 203 रुपये); कुशल श्रमिक 6448 रुपये (8 घण्टे के 248 रुपये) / पच्चीस-पचास पैसे का पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली–110054

ओम ज्योति एपरेल्स मजदूर : "बी-241 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 बजे काम आरम्भ होता है और साँय 6 बजे कटिंग, स्टोर, काज-बटन, वाशिंग के 50 मजदूरों को छोड़ देते हैं। जबकि, 300 सिलाई कारीगर तथा 50 फिनिशिंग विभाग के मजदूरों को महीने में 15 दिन रात 1 बजे तक व 8 रोज अगली सुबह 6 बजे तक काम करना पड़ता है। रविवार को साँय 6 बजे छोड़ देते हैं। महीने में 200-250 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। हाँ, जब सुबह 9 से अगली सुगह 6 बजे तक काम करवाते हैं तब तीन दिहाड़ी देते हैं। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं पर ई. एस.आई. व पी.एफ. 400 में 50 मजदूरों की हीं हैं। फैक्ट्री में 20 कैमरे लगा रखे हैं। नवम्बर-आरम्भ में एक जाँच वाला आया और पूछा कि ओवर टाइम होता है क्या तो नये मजदूरों ने कहा कि हाँ, रात 1 बजे तक, अगली सुबह 6 तक रोकते हैं .... भर्ती के समय कहते हैं कि कोई पूछे तो कहना ओवर टाइम नहीं होता। उस दिन साहबों में हड़कम्प मच गया। जाँच वाला साँय 6 तक रहा और कम्पनी ने साँय 6 बजे सब मजदूरों की छुट्टी कर दी। जाँचवाला 15 दिन बाद फिर आया और जब ओवर टाइम के बारे में पूछा तो मजदूरों ने कहा कि आप जानते हुये क्यों पूछते हैं।"

एलायन्स फुड श्रमिक : " एक्स-1 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में मछलियों की पैकिंग करते मजदूरों की तनखा 4000-4500 रुपये। ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। दिल्ली के अलावा पैक मछलियाँ चण्डीगढ तथा लुधियाना भी भेजी जाती हैं। डेलीवरी बॉय की तनखा 4000-4500 और ड्राइवरों की 5000-6000 रुपये। ड्राइवर को ओवर टाइम के पैसे देते हैं पर संग रहते डेलीवरी बॉय को नहीं।"

किंगफिशर बीयर कामगार : "बी-118 ओखला फेज-1 स्थित गोदाम में अब सर्दियों में 100 मजदूर हैं, गर्मियों में 250 हो जाते हैं। ड्युटी सुबह 9-9½ आरम्भ होती है और छूटने का कोई समय नहीं पर रात 11½ से पहले नहीं छोड़ते, रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ओवर टाइम के पैसे नहीं देते, 14-17 घण्टे काम के 200 रुपये देते हैं। साहब बहुत गाली देते हैं।"

नियोगी ऑफसेट वरकर : "डी-78 ओखला फेज-1 स्थित इन्डस्ट्रीयल प्रिन्टिंग प्रेस में **एल जी, सैमसंग, पैनासोनिक, फिलिप्स** आदि का काम होता है। जनरल शिफ्ट सुबह 9 से साँय 5½ की है पर महीने में 25 रोज रात 9 बजे तक रोकते हैं। ऑफसेट विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रविवार को 8 घण्टे काम। अस्सी स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान डेढ की दर से। ठेकेदारों के जरिये रखे 150 वरकरों को 15-18-20 रुपये प्रति घण्टा, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ओवर टाइम सिंगल रेट।"

विक्टर कम्पोनेन्ट मजदूर : "बी-86 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में टी वी के पुर्जे बनाते मजदूरों की तनखा 3000-4500 रुपये। प्रतिदिन 2 घण्टे ओवर टाइम, सिंगल रेट से। महिला मजदूरों के साथ अभद्र व्यवहार।"

यात्री एक्सपोर्ट श्रमिक : "बी-159 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 9 की शिफ्ट है और महीने में बीस रोज रात 1 बजे तक रोकते हैं। हर रविवार को रात 1 बजे तक काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। धागे काटती, मोती-सितारे लगाती 30 महिला मजदूरों की तनखा 3500 रुपये। पुरुष हैल्परों की तनखा 3500 और दाग हटाने वालों की 4500 रुपये। सैम्पल टेलर की तनखा 6448 और आलटरनेटर तथा इनिशियल चेकर की 5278 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 150 मजदूरों में 15 की ही हैं।"

हेवर्ड बीयर कामगार : "एक्स-18 ओखला फेज-2 स्थित गोदाम में 100 मजदूर काम करते हैं। ड्युटी सुबह 9-9½ आरम्भ होती है और छूटने का कोई समय नहीं। रात 2 बजे तक रोकते हैं तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते। ओवर टाइम के पैसे नहीं, बस 200 रुपये देते हैं। ई.एस.आई. नहीं, पी. एफ. नहीं।"

सुरक्षा कर्मी

"हमारा काम है फैक्ट्री को जलते हुये देखते रहना। आग बुझाना हमारा काम नहीं है। फैक्ट्री पूरी तरह ज़ल कर राख हो जाये तब उस राख को देखते रहना। कोई फैक्ट्री के बारे में पूछने आये तो बताना कि फैक्ट्री यहाँ पर थी, जल कर राख हो गई, यह वही राख है। बस यही हमारा काम है। फैक्ट्री को देखना हमारा काम है, फैक्ट्री की सुरक्षा करना नहीं। हम अपनी ही सुरक्षा नहीं कर पा रहे, फैक्ट्री की सुरक्षा कैसे करेंगे।"

सेक्युरिटी गार्ड : "दिल्ली में कापसहेड़ा बार्डर पर शाखा कार्यालय वाली **बालाजी सेक्युरिटी** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं, कोई छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 5000 रुपये देते हैं। भर्ती से पहले 500 रुपये जमा करवाते हैं। पहली तनखा से 2000 रुपये वर्दी के काट लेते हैं। दिन में तो 12 घण्टे खड़े रहना पड़ता ही है, रात को बैठे पकड़ लिया तो 200 रुपये काट लेते हैं। बारह घण्टे बाद रोकते हैं तब 36 घण्टे की ड्युटी हो जाती है और तब 30 रुपये रोटी के लिये देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। तनखा हर महीने देरी से, अक्टूबर की 15 नवम्बर को दी। तलाशी लेना खराब लगता है।"

सुरक्षा कर्मी : "यू-28 डी एल एफ फेज-3 गुड़गाँव में शाखा कार्यालय वाली **साइन्टिफिक मैनेजमेन्ट सर्विसेज (एस एम एस)** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। कोई छुट्टी नहीं, महीने के तीसों दिन काम। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 6100 रुपये बताते हैं, ई.एस.आई. व पी.एफ. काट कर 5700 रुपये....... पर दिल्ली में मुख्यालय से 5200 रुपये ही आते हैं। कहते हैं कि वर्दी-जूते के 650 रुपये काटेंगे पर हर महीने 100 रुपये काटते रहते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते।"

सेक्युरिटी गार्ड : "शाखा कार्यालय मानेसर, मुख्यालय नेहरु प्लेस, दिल्ली वाली **मैसिव सेक्युरिटी** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक अवकाश नहीं, कोई छुट्टी नहीं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के 5000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि इन 5000 में से काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते। लगातार 36 घण्टे ड्युटी करवाते हैं तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते।"

सुरक्षा कर्मी : "सतवड़ी, छतरपुर, दिल्ली में कार्यालय वाली **ओम सेक्युरिटी** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी लेती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 5000 रुपये देते हैं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। तनखा देरी से, अक्टूबर की 15 नवम्बर को दी।"

आई एम टी मानेसर (पेज तीन का शेष)

ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। मजदूर ओवर टाइम चाहते हैं..... दिवाली से पहले 22-23 वर्ष का मनोज डाई पंचिंग मशीन साफ कर रहा था कि मशीन चल पड़ी। ठेकेदार के जरिये रखे गये मनोज का पूरा शरीर पंच हो गया, तत्काल मृत्यु। नवम्बर में ही 15 दिन बाद फट्टे पर लगा कागज का ढेर गिरा, फोरमैन का पैर टूट गया। रात को 12 घण्टे की ड्युटी के बाद 30 नवम्बर को कमरे पर पहुँचते ही कुमार प्रिन्टर्स के स्थाई मजदूर रामजीत की मृत्यु हो गई।"

बेनाटन वरकर : "रामपुरा-नौरंगपुर मार्ग पर स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और ठेकेदार के जरिये रखे 200 मजदूरों को सिंगल रेट से भी कम, 18 रुपये प्रतिघण्टा देते हैं।"

सत्यम ऑटो कम्पोनेन्ट्स मजदूर : " होण्डा के सामने सैक्टर-3 आई एम टी स्थित फैक्ट्री में **हीरो होण्डा** की चेसिस, टंकी, साइड कवर बनाते दो ठेकेदारों के जरिये रखे 1000 मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

डोना कामगार : "सैक्टर-3 आई एम टी स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 4000 और सिलाई कारीगरों की 4500-5000 रुपये। एक वर्ष काम करते हो जाता है तब ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू करते हैं। तनखा देरी से, अक्टूबर की 20 नवम्बर को दी। साहब गाली देते हैं।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011